Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

एड्स: उन्मूलन के लिए उठाए गए कदम

नव निशा

शोध छात्रा समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

सारांश

एड्स: उन्मूलन के लिए उठाए गए कदम

वर्तमान समय मे एड्स जो एक बहुत ही भयानक बीमारी है, का प्रसार बहुत ही तेजी से हर जगह हो चुका है। विशेष कर विकासशील देशों मे व्यापक रूप से एड्स अपने पैर पसार चुका है। अनेक विषज्ञों के अनुसार निर्धनता को इस रोग के फैलने का मुख्य कारण देखा जा रहा है। विशेषज्ञों के द्वारा चर्चा के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया हैं की एड्स और निर्धनता मे सह संबंध पाया जाता है। साथ ही यह भी पाया गया है की एड्स का प्रभाव अत्यन्त ही घातक है। इस बीमारी से ग्रसित व्यक्ति की शारीरिक क्षमता घटने लगती है और धीरे धीरे समाप्त हो जाती है। एक अध्ययन के अनुसार यह तथ्य भी सामने आया है की महिलाओं पर इसका प्रभाव और भी अधिक घातक है। प्रायः वयस्क महिलाएं ही यौन क्रिया अथवा शोषण का शिकार होती हैं और इस रोग के चपेट मे आती हैं। सबसे घातक यह है की इन महिलाओं की संताने भी एड्स से ग्रसित हो जाती है और जीवनपर्यंत एड्स के प्रभाव को झेलना इन बच्चों की लाचारी होती है। ऐसे बच्चे अनेक प्रकार की शारीरिक और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को झेलते हैं और अधिकांशत: उनका जीवन किसी अनाथालय मे ही व्यतीत होता है। ऐसी दशा मे कोई भी व्यक्ति अथवा परिवार इनको गोद लेने के लिए भी आगे नही आता क्यूकी ये बच्चे एड्स से पीड़ित होते हैं और इनको विशेष देखभाल की भी आवश्यकता होती है।

अनेक ऐसे कारण हैं जैसे की अशिक्षा, पैसों की कमी, कमजोर स्वास्थ्य जो की महिलाओं को यौन संपर्क मे आने के लिए बाध्य करता है। ऐसी भयावह परिस्थिति को देखते हुए यह ही कहा जा सकता है की यदि एड्स के प्रभाव से बचना है तो यौन संपर्क की अवधि में गर्भ निरोधक दवाइयों और कंडोम का प्रयोग किया जाए। विकासशील देशों के अनेकों अस्पतालों मे एड्स के मरीजों की संख्या मे अनवरत वृद्धि होती चली जा रही है। और यह बेशक चिन्ताजनक है। एड्स का प्रभाव व्यक्ति के स्वास्थ्य तक ही सीमित नहीं है वह व्यापक रूप से हर क्षेत्र मे प्रभावित करती है। एड्स के मरीज अपने रोजगार और धंधे से भी हाथ धो बैठते हैं। यहाँ तक की अपने परिवार से और फिर समाज से भी बहिष्कृत कर दिये जाते हैं। मित्रों और परिचितों के द्वारा भी अस्वीकार कर दिये जाते हैं। यह भी देखा जाता है की अनेक बार चिकित्सकों के द्वारा भी उनका इलाज करने से मना कर दिया जाता है। समाज तो उनका बहिष्कार पहले ही कर देता है। एड्स से प्रभावित देशों मे कोई भी कुशल श्रमिक काम करने से डरते हैं। ऐसे देशों

की आर्थिक स्थिति बहुत ही क्षीण होती है। ऐसे एड्स के मरीज जो की विवाहित हैं उनकी पत्नियाँ विधवापन को भोगती हैं और हर दिन एक तरह से उनकी मौत ही होती रहती है। ऐसी परिस्थिति की कल्पना मात्र भी अपने आप मे भयावह है। कुछ एक देशों मे बजट का एक बड़ा भाग एड्स के रोगियों के इलाज मे तथा अन्य महामारियों मे खर्च हो जाता है। कुछ भाग बचाव एवं राहत के कार्यों मे खर्च हो जाता है।

एड्स रोग: महानगर की देन

भारत में नगरीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया मे बहुत ही तेजी देखने को मिली है। अतः इसके फलस्वरूप दूर दराज के देहातों से और पिछड़े इलाकों के लोग रोजगार पाने की लालसा मे शहरों का रुख करने लगे हैं। खास तौर से ऐसी छोटी जगहों से लोग आस पास के शहरों से ज्यादा महानगरों का रुख करते हैं। इसका मुख्य कारण यह भी है की महानगरों मे उन्हे बाकी जगहों की अपेक्षा अधिक आय प्राप्त होगी। ऐसे नगरों और औद्योगिक क्षेत्रों में मकान का किराया बहुत ही अधिक होता है और भिजन भी प्रायः महंगे दरों में मिलता है। ऐसी स्थिति में एक औसत आय वाले व्यक्ति के लिए यहा संभव ही नहीं है की वह अपनी पत्नी और बच्चों को साथ लेकर एक महानगर में जीवनयापन करे और पारिवारिक जीवन व्यतीत करे। अतः ऐसी परिस्थिति में लोग अकेले रहते हैं और किसी तरह अपना जीवनयापन करते हैं। जब कभी भी उन्हें यौन संबंध की लालसा होती है तो वे अधिकतर वे किसी ऐसी औरत के पास जाते हैं जो की वेश्यावृति मे प्रवित्त होती है और वह भी एड्स की रोगी होती है। इस कारण वे भी एड्स से प्रभावित हो जाते हैं। इसलिए यह एक बहुत बड़ा कारण है एड्स रोग के फैलने का और इसी वजह से यह बीमारी महानगरों की देन है।

ऐसा भी पाया गया है की भारत के हर राज्य मे एड्स की दर अलग है। सर्वाधिक मामले मुंबई जैसे महानगरों मे देखे जाते हैं। यहाँ तक की मुंबई को एड्स की राजधानी के नाम से भी जाना जाता है। केवल मुंबई में इस रोग के 37% रोगी पाये जाते हैं जो की अध्ययन के नए आंकड़ो के अनुसार पाया गया है। यह सत्य है की आधे मरीज देश के अन्य राज्यों से हैं। इसके पश्चात दक्षिण भारत के केरल में, तमिलनाडू के मद्रास में, पूर्वी भारत के मणिपुर, मिजोरम, और नागालैंड एवम उत्तर भारत के दिल्ली में, पश्चिम भारत के नागपुर, कोल्हापुर और औरंगाबाद में।

एड्स: रोग से लड़ने के लिए उठाए गए कदम

इस भयंकर रोग से निपटने और निजात पाने के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के द्वारा नेशनल एड्स कंट्रोल प्रोग्राम का प्रभान्ध किया गया है और इसका क्रियान्वयन भी। इस के माध्यम से 150 से अधिक ज़ोनल ब्लड टेस्टिंग लैब्स की स्थापना की जा चुकी है। लगभग 140

से अधिक केन्द्रों का विस्तार भी किया जा रहा है और इन केन्द्रो को स्थापित करने की प्रक्रिया भी साथ ही साथ की जा रही है।

भारत सरकार एड्स के रोकथाम, एड्स रोगियों के उपचार और ऐसे एड्स के रोगीयों को जो की परिवार से बहिष्कृत कर दिये गए हैं उनके पुनरुत्थान और पुनर्वास के लिए बहुत प्रयत्नशील है। सरकार के द्वारा अनेकानेक ऐसे कार्यक्रम और योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है जिससे एड्स के रोगियों को लाभ मिल सके और वे भी एक बेहतर जीवन जी सके आम लोगों की तरह। अतः सरकार के द्वारा इस विषय पर काफी धन खर्च किया जा चुका है और आगे भी किया जा रहा है। एड्स से लड़ने के लिए भारत सरकार के द्वारा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च ऑन रिप्रोडक्टिव हैल्थ की स्थापना चंडीगढ़ में की जा चुकी है। इसके अलावे एड्स रिसर्च इंस्टीट्यूट की भी स्थापना पुणे मे की गई है जो की एड्स से संबंधित अनेकानेक प्रकार की चुनौतियों का सामना बहुत ही मुस्तैदी के साथ कर रही है और यह अपने आप मे भारत सरकार के द्वारा उठाए गए सराहनीय कदम हैं। एड्स के निदान के लिए गैर सरकारी स्तर पर भी अनेक प्रयास किए गए हैं। रोग के रोकथाम की प्रक्रिया के लिए वर्ल्ड बैंक का भी विशेष योगदान रहा है जो की बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके अलावे एड्स के निदान के लिए अनेक संगठनों और संस्थाओं की भी विशेष भूमिका रही है जो की बहुत ही सार्थक और सराहनीय सिद्ध हुई है। ये संस्थाएं और संगठन बिना किसी निजी स्वार्थ के एड्स से निपटने और पुनर्वास कार्यक्रमों के लिए अपना सहयोग अनवरत प्रदान कर रही हैं।

कुछ संस्थाओं के नाम निम्नलिखित हैं और इनका सहयोग इस क्षेत्र में अत्यंत सरहनीय है:-

1) फॅमिली हैल्थ इंटरनेशनल
2) नेशनल एड्स रिसर्च इंस्टीट्यूट
3) इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वुमेन
4) नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ कौम्यूनिकेबल
5) पॉप्युलेशन काउंसिल
6) वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गनाइज़ेशन
7) नेशनल एड्स कंट्रोल ऑर्गनाइज़ेशन
8) बिल अँड मेलिंडा गेट्स फ़ाउंडेशन
9) यूनाइटेड नेशन्स प्रोग्राम ऑन एड्स, इत्यादि।

एड्स रोग होने का मतलब ही हैं की बहुत ही निकट समय मे मृत्यु को प्राप्त हो जाना। वर्तमान मे जनसंचार के विभिन्न आयामों के द्वारा लोगों को एड्स से परिचित करवाया जा चुका है। शिक्षित के साथ साथ अब अशिक्षित लोग भी एड्स की भयावहता से परिचित हो चुके हैं और बीमारी को भली-भाँति समझने भी लगे हैं। अतः लोग यह समझने लगे हैं एड्स एक बहत ही घातक बीमारी है जो की बहुत

ही क्रूरता से अपने रोगी की जान ले लेती है। जैसा की सभी जानते हैं अभी तक एड्स की कोई दवा बनाई नहीं जा सकी है, इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है की जैविकीय बचाव की अपेक्षा व्यावहारिक परिवर्तन पर ही ध्यान दिया जाए। यही एक सरल उपाय है जो की एड्स से पूर्णतया रक्षा कर सकने मे सक्षम है। तात्पर्य है की ऐसी कोई भी स्त्री अथवा पुरुष से यौन संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए जो की अपरिचित हो। यौन संबंध मे नैतिकता का पालन भी नितांत आवश्यक है। एड्स से बचाव के लिए यौन निरोधक शिक्षा भी लोगों को दी जा रही है। इस शिक्षा के माध्यम से लोगों को इसकी खामियों से परिचित करवाया जा रहा है और उनके जीवन को खतरे मे पड़ने से बचाया भी जा रहा है।

अतः यहाँ यह कहना सार्थक होगा की एड्स के उन्मूलन के लिए उठाए गए सभी कदम बहुत ही कारगर साबित हो रहे हैं और सभी योजनाये सफल हो रही हैं। सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों का भी योगदान अतुलनीय है और एड्स के मरीजों के लिए लाभदायक सिद्ध हो रहीं हैं। गौर करने योग्य बिन्दु यह है की जनता में एड्स को लेकर जागरूकता के साथ साथ एड्स से पीड़ित मरीजों के संख्या मे भी कमी आ रही है।